IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत में धर्म की भूमिका एवं मानव समाज

अजय कुमार

विषय–इतिहास जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा

भारत विभिन्न संस्कृतियों, परम्पराओं, किबदंतियों, विश्वासों, अविश्वासों, आस्तिकों और नास्तिकों का देश है। भारत में मुख्यतः हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिख, पारसी, बौद्ध, जैन रहते हैं। यहां आर्यसमाजी, कबीरपंथी एवं सूफी मत के माननेवाले हैं। सूफी मत के मानने वाले मुसलमान और हिन्दू शेख सलीम चिस्ती के दरगाह पर चादर चढ़ाने जाते हैं।

भारत में हिन्दू धर्म को वैदिक धर्म के रूप में स्वीकार किया गया है, साथ ही पौराणिक देवी–देवताओं में लोगों की आस्था है। जीवाश्मशास्त्रियों (पेलिएन्टोलोजिस्टस) एवं कार्बन आइसोटोप डेटिंग के अनुसार पृथ्वी को 6 युगों में बांटा गया है। एजोइक आर्कियोजोइक और प्रीटिरोजोइक युग में मूंगा शैवाल, शंखा, प्रोटोजवा, सूक्ष्म जीवाणु और जीवाणु थे। पेलिओजेइक युग में कछुआ, मोलस्क, कीट, सरीसृप थे। मीसोजोइक युग में शार्क मत्स्य, डायनासोर, शंकुधारी पेड़ और अनावृतवीजी वनस्पति तथा सिनोजोइक युग में मैमथ अर्थात् हाथी के समान विशाल जीव पक्षी, वनमानुष (स्तनधारी) और मानव इस धरती पर आये। यह युग 60 करोड़ वर्ष पूर्व से 7 करोड़ वर्ष पूर्व माना जाता है। राहुल सांस्कृत्यायन के अनुसार यह काल 30 करोड़ वर्ष पूर्व है।

विज्ञानविद् ज्योतिषियों का मत है कि सूर्य एक पिण्ड था। सूर्य से टूटकर पृथ्वी और पृथ्वी से टूटकर चन्द्रमा का निर्माण हुआ। आकाश में धुएं, गैस और दूरस्थ तारावली के कारण प्रकाश पूंज (तारा धुंध) है, जिसे निहारिका कहा जाता है। अभी तक खगोलशास्त्रियों को सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की जानकारी नहीं है। भारत में सृष्टि की दूसरी अवधारणा विष्णु और ब्रह्मा के साथ जुड़ा हुआ है। महाराज सिंह भारती ने अपनी पुस्तक 'सृष्टि और प्रलय' में लिखा है कि निर्जीव से जीवों की उत्पति हुई। इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन और न्यूट्रॉन से जीवों की उत्पति हुई।

वैदिक काल के देवता इन्द्र, मित्र, वरूण, अग्नि, जल, अन्न और सोम के स्थान पर पौराणिक देवताओं ब्रह्मा, विष्णु और महेश के रूप में राम, कृष्ण और शिव की पूजा प्रचलित है। दुर्गा, काली, सरस्वती तथा भिन्न–भिन्न प्रान्तों में ग्रामीण देवताओं की पूजा की जाती है। ऋग्वेद पुनर्जन्म को नहीं मानता है, परन्तु छान्दोग्य उपनिषद में पुनर्जन्म की पुष्टि की गई है। हिन्दू धर्म स्वर्ग और नरक के विश्वास से चलता है। आत्मा और परमात्मा की अवधारणा से हिन्दू धर्म ओत–प्रोत है। हिन्दू धर्म में कर्मकांड एवं ब्रह्म ज्ञान दोनों का समावेश है। कर्मकांड, पूजा–पाठ, तीर्थयात्रा, व्रत–त्योहार हिन्दुओं की आस्था का मूल आधार माना जाता है।

भारत में बौद्ध, जैन एवं चार्वाक को अनिश्वरवादी धर्म माना जाता है। चार्वाक दर्शन के अनुसार ईश्वर की सत्ता एक छलावा है, ढोंग है। चार्वाक दर्शन कहता है कि यावत् जीवेत् सुखम् जीवेत् ऋण कृत्वा घृत्म पीवेत, भस्मी भूतस्य जीवस्य पुनर्जन्म कुतो भवेत् अर्थात् जब तक जीओ सुख से जीओ कर्ज लेकर घीव पीओ मरने के बाद शरीर जलकर राख को ढ़ेर मात्र बच जाता है अर्थात् पुनरागमन (दोबारा जन्म) नहीं होता है। गौतम बुद्ध का कहना था कि बेड़े की तरह पार उतरने के लिए मैंने विचारों को स्वीकार किया, न कि सिर पर उठाये–उठाये फिरने के लिये। हिन्दुओं के पूजा स्थल मंदिर है, मुसलमानों के मस्जिद, ईसाईयों के गिरजाघर, बौद्धों के बौद्ध विहार, जैनियों के जैन मंदिर, पारसियों के अग्नि मंदिर, सिखों के गुरूद्वारा, आर्यसमाजियों के आर्यमंदिर, कबीरमत के माननेवाले कबीरमठ और सूफियों के दरगाह है। हिन्दू मूर्त्ति की पूजा में आस्था रखते हैं, तो ईसाई और मुसलमान मूर्त्तिपूजक नहीं हैं। हिन्दू सगुण और निर्गुण (निराकार ईश्वर) को मानते हैं, तो ईसाई और मुसलमान निराकार ईश्वर में आस्था रखते हैं। हिन्दू दशहरा में जुलूस निकालते हैं, तो मुसलमान मुहर्रम में जुलूस निकालते हैं। पशु बलि की प्रथा हिन्दू और मुसलमान दोनों में है। मुसलमान कयामत के दिन (डे ऑफ जजमेंट) में विश्वास करते हैं, तो हिन्दू पुनर्जन्म में। सरदार भगत सिंह ने लिखा है कि ईश्वर में विश्वास रखनेवाला हिन्दू पूर्व जन्म पर एक राजा होने की आशा कर सकता है। एक मुसलमान या ईसाई स्वर्ग में व्याप्त समृद्धि के आनन्द की तथा अपने कष्टों और बलिदान के लिए पुरस्कार की कल्पना कर सकता है आगे कहा '' मैं जानता हूं जिस क्षण रस्सी का फंदा मेरी गर्दन पर लगेगा और मेरे पैरों की नीचे तख्ता हटेगा, वह पूर्ण विराम होगा।

भारत में रहने वाले विभिन्न धर्मों के मानने वालों में अन्तर है। कोई पूरब की ओर मुंह करके पूजा करता है, तो कोई पश्चिम की ओर, कोई दाढ़ी रखता है, तो कोई चुटिया। एक कहावत है कि कोई विदेशी भारत आया था, उससे पूछा गया कि भारत को आप कैसे देखते हैं। उसने कहा कि भारत एक धार्मिक देश है परन्तु यहां धार्मिक आदमी नहीं दिखायी पड़ता है।

हिन्दू धर्म वर्णव्यवस्था जिसे जात–पांत के रूप में माना जाता है, पर आधारित है। डा0 अम्बेदकर ने कहा था हिन्दू धर्म का अर्थ होता है जात–पांत। वैदिक काल से ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में हिन्दू धर्म को बांटा गया। यहां तक की औरत और शूद्र को वेद की ऋचा सुनने पर कान में शीशा पिघलाकर डाल देने की बात कही गई। दक्षिण भारत में शैव धर्म को मानने वाले शिवलिंग को सड़क के मुख्य द्वार पर बने तोरण के ऊपर रखते हैं, जबकि उत्तर भारत में जमीन पर दक्षिण भारत में खासकर कर्नाटक में लिंगायत सम्प्रदाय के लोग हिन्दुओं के भगवान शिव की पूजा नहीं करते, लेकिन भगवान को उचित आकार इष्टलिंग के रूप में पूजा करने का तरीका प्रदान करता है। इष्टलिंग अण्डे के आकार की गेंदनुमा आकृति होती है, जिसे वे धागे से अपने शरीर पर बांधते हैं। लिंगायत इष्टलिंग को आंतरिक चेतना का प्रतीक मानते हैं।

भारत अनेकता में एकता का देश माना जाता है। भिन्न धर्मों के लोगों में टकराव होता है, फिर भी वे मिल–जुलकर रहते हैं। अयोध्या में मस्जिद गिराने की घटना के बाद बांग्लादेश तथा अन्य देशों में मूर्त्तियां तोड़ने की घटना घटित हुई। दंगे भी हुए और हजारों लोग मारे गये। स्वर्ण मंदिर की घटना जिसमें इंदिरा गांधी की हत्या हुई थी, सिखों और गैर सिखों के बीच दंगे में हजारों लोग मारे गये, भारत विभाजन भी धर्म के नाम पर हुआ और आज भी भारत और पाकिस्तान में वैमनस्य कायम है। भारत में धर्मांतरण की घटनाएं भी होती रहती है, जो देश में धार्मिक नफरत पैदा करता रहता है।

भारत के महान समाजसुधारकों, विचारकों, मनीषियों ने मानवता को संदेश दिया है, जिनमें महर्षि दयानन्द सरस्वती, राजाराम मोहन राय, स्वामी विवेकानन्द, विद्रोही कवि काजी नजरूल इस्लाम इत्यादि थे। धर्म का राजनीति से भी गहरा सम्बन्ध है। भारत में हिन्दू बहुसंख्यक हैं, मुसलमान, सिख, अल्पसंख्यक है और कई जातियां अल्पसंख्यक हैं। संख्या के आधार पर धर्मों एवं जातियों में भेद पैदा कर राजनीतिक लाभ लेकर सता सुख भोगने की परम्परा आजादी के समय से आज तक देखा जाता है। अमीर जाति के लोग गरीब जाति के लोगों पर आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक रूप से हावी रहते हैं।

मुसलमानों ने हिन्दुओं को हराकर राज किया, अंग्रेजों ने मुसलमानों को हराकर राज किया। आजादी की लड़ाई में हिन्दू और मुसलमान एक साथ मिलकर अंग्रेजों को भारत से खदेड़ा। अंग्रेजों ने दोनों में फूट डालकर राज किया। आजादी के बाद भारतीय संविधान लागू हुआ और संविधान के अनुसार भारत का शासन होता है, परन्तु भिन्न–भिन्न राजनीतिक दल के नेता अपनी सता के लिए संविधान का उपयोग करते हैं।

डा0 अम्बेदकर ने संविधान के बारे में कहा था कि किसी देश का संविधान कितना भी अच्छा हो अगर उसे लागू करनेवाला खराब होगा, तो संविधान खराब हो जायेगा और यदि संविधान कितना भी बुरा हो लागू करनेवाल अच्छा होगा, तो अच्छा हो जाएगा।

दुनिया में धर्मान्ध और धार्मिक दो विचारधारा के लोग होते हैं। धर्मान्ध व्यक्ति धार्मिक परम्पराओं, रीति रिवाजों, कर्मकांडों को ही धर्म समझता है, जबकि धार्मिक व्यक्ति ईमानदारी, सच्चाई, अहिंसा, सदाचार, प्रेम, त्याग, सहयोग और भाईचारा सम्बन्धी विचारधारा को समाज में फैलाने का काम करता है। हमें धर्म को हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिख, पारसी, यहूदी, बौद्ध, जैन के रूप में नहीं बल्कि मानव धर्म (मानवता रूप) में देखना और व्यवहार करना चाहिए। बंगाल के कवि चंडीदास जन्म (1408 ई0) ने कहा था शुनो रे मानुष भाई, सबार उपरे मानुष सत्य ताहार उपरे नाई। अर्थात् हे मनुष्य भाई सुनो, सबके ऊपर मनुष्य सत्य है। इस सत्य (मनुष्य) से परे कोई नहीं। चंडीदास ने कहा है कि मानवता से बड़ा कोई धर्म नहीं है–यही उनका मानव समाज के संदेश हैं।

संदर्भ सूची–

धर्म के नाम पर–गीतेश शर्मा

मैं नास्तिक क्यों हूं–शहीदे आजम सरदार भगत सिंह

नवीन राष्ट्रीय स्कूल एटलस मूल रचयिता–स्व0 बीबा सिंह कौशल

खट्टर काका–हरिमोहन झा

मेरी जीवन यात्रा–महापंडित राहुल सांकृत्यायन

मानव समाज–महापंडित राहुल सांकृत्यायन

तुम्हारी क्षय–महापंडित राहुल सांकृत्यायन